हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व और उसकी चुनौतियाँ

नरेश कुमार
प्रवक्ता इतिहास
शिक्षा विभाग, हरियाणा

प्रस्तावना-

हिन्दी शब्द मानस–पटल पर अंकित होते ही शरीर में जो उत्साह और सम्मान की तरंगें उठने लगती हैं वह प्रत्येक हिन्दी–भाषी मनस्वी के लिए एक अलग ही अनुभूति है। आज हिन्दी भारत के मात्र 10 राज्यों या भारतवर्ष की ही भाषा नहीं है अपितु यह एक अन्तर्राष्ट्रीय समाज और मानवीय समरसता का सम्प्रेषण करने वाली एक महत्त्वपूर्ण भाषा भी है। जो मानव को मानव से और देश को विदेशों से जोड़कर अपने अन्तर्राष्ट्रीय सफर की ओर अग्रगामी है। भाषा संबंधी सर्वाधिक विश्वस्त पुस्तक एथेनेलॉग के एक संस्करण के अनुसार विश्व में लगभग छः हजार सात सौ बारह भाषाएँ बोली जाती हैं। समय के साथ न चलने वाली भाषाएँ अपने मूलरूप को खोकर अस्तित्वहीन हो जाती हैं तो कुछ नई भाषाएँ भी समय के साथ उभर कर आ जाती हैं किन्तु अपनी समृद्ध शब्द–संपदा, सुगमता और नव्यतर वैज्ञानिक उपकरणों के कारण हिन्दी अपने वैश्विक गौरव को बढ़ाएँ ही जा रही है।

हिन्दी का वैश्विक परिदृश्यः

यदि थोड़ी देर के लिए विश्व में हिंदी के भावी स्थान की बात छोड़कर उसकी वर्तमान स्थिति–गति और महत्ता पर ही नजर दौड़ाएँ तो हमारे सामने जो वैश्विक स्तर के आंकड़े आते हैं, वे बेहद उत्साह–वर्धक आते हैं। उदाहरणार्थ विश्व के 160 देशों में हिंदी देशी–विदेशी लोगों के बीच भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अपनत्व–भाव को जगा रही है। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि भारत ही एक ऐसा एकमात्र देश है जिसकी पाँच भाषाएँ विश्व की 16 प्रमुख भाषाओं (अरबी, अँग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश, हिंदी, इतावली, पुर्तगाली) में सम्मिलित होते हुए भी भारत सरकार की उपेक्षा के कारण वह अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक छह भाषाओं जिसमें चीनी, स्पेनिश, अँग्रेजी, अरबी, रूसी व फ्रेंच शामिल हैं। उनमें अपना नाम जुड़वाने का गौरव प्राप्त नहीं कर सकी है। यह शोध का विषय है कि अस्सी करोड़ (43%) से अधिक आमजनों द्वारा व्यवहृत हमारी हिंदी भाषा सयुंक्त राष्ट्र संघ में स्थापित नहीं हो पायी है। इसके विपरीत क्रमशः बीस व इक्कीस करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली रूसी व अरबी भाषाओं का वहाँ स्थापित होना निश्चित रूप से लज्जा का विषय है।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने संविधान के भाग–17 के अध्याय 1 की धारा 343 (1) के अनुसार यह घोषणा की कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। उस समय विश्व में भाषाओं के प्रयोक्ताओं की संख्या के आधार पर हिंदी पाँचवे स्थान पर थी। चीनी, स्पेनिश, अँग्रेजी एवं

रूसी भाषाएँ हिंदी से आगे थी। 1980 तक आते–2 हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या में तीव्रतर वृद्धि दर्ज की गई और हिंदी, चीनी और अँग्रेजी के पश्चात् तीसरे स्थान पर आ गई। कहा जाता है कि हिन्दी विश्व के लगभग सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों–जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस हैं उनमें किसी न किसी रूप में प्रयोग होती है। वह विश्व पटल पर नवल चित्र के समान अंकित हो रही है। आँकड़ों की अगर बात करें तो यहाँ तक बताया जाता है कि बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की सबसे बड़ी भाषा हिंदी ही है। डॉ0 करुणाशंकर उपाध्याय के अनुसार – ''इस बात को सर्वप्रथम सन् 1999 में 'मशीन–ट्रांसलेशन समिट' अर्थात् यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो0 होजुमि तनाका ने भाषाई आँकड़े पेश करके सिद्ध किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम है और हिंदी का द्वितीय है। अँग्रेजी तो तीसरे स्थान पर पहुँच गई है। इसी क्रम में कुछ ऐसे अनुसंधित्सु विद्वान भी सक्रिय हैं जो हिंदी को चीनी के ऊपर अर्थात् प्रथम क्रमांक पर दिखाने के लिए प्रयत्नशील है।''[1] भाषा शोध अध्ययन ने 2004 में लिखा था कि विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन है जबकि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल नब्बे करोड़ चार लाख छह हजार छह सौ चौदह है।

विश्व के मानचित्र पर अगर हिन्दी के नवल चित्र को तलाशा जाए तो पाते हैं कि सौ से भी अधिक देशों में भारतीय प्रवासी ब्रेन–ड्रेन का शिकार होकर वहीं निवास करते हैं। जहाँ भी ये भारतीय हिन्दी बोलने वाले प्रवासी हैं वहाँ हिंदी भाषा किसी न किसी रूप में जानी या प्रयोग में लाई जाती है। 'विश्व क्षितिज पर हिन्दी' नामक लेख में डॉ0 जयन्ती प्रसाद नौटियाल लिखते हैं कि – ''हिन्दी विश्व के 73 देशों में स्थान बना चुकी है, भारत के प्राय सभी विश्वविद्यालयों में तो हिंदी पढ़ाई ही जाती है, इसके अलावा विश्व के एक सौ दस विश्वविद्यालयों/संस्थानों में भी हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन होता है। विश्व में जहाँ भी भारतीय मूल के निवासी हैं वहाँ किसी न किसी रूप में अर्थात् राजभाषा, सहभाषा, संस्कार की भाषा अथवा शास्त्रीय (प्राचीन) भाषा की हैसियत से हिन्दी विद्यमान है।''[2]

भारत से बाहर भी हिंदी भाषा भारत की सामाजिक संस्कृति की संवाहिका बनी हुई है। जिन देशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार आशातीत है उनमें हैं – मारीशस, सूरीनाम, फीजी, त्रिनीदाद, गयना, इंग्लैंड, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, मलाया, सिंगापुर, बांग्लादेश, भूटान, इण्डोनेशिया, कुवैत, मलेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, बहरीन, ओमान आदि देशों में हिंदी के महत्त्व को समझा जाता है और वहाँ अध्ययन–अध्यापन तथा प्रकाशन हिंदी में भी होता रहता है। अकेले अमेरिका में ही लगभग दौ सौ से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन–पाठन हो रहा है। आज जब हम 21वीं सदी में वैश्विकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियों एवम् भाषाओं के आदान–प्रदान व संवाद

की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मानवता को जोड़ने के लिए एक सेतु का कार्य कर रही है। हिंदी पहले से ही बहुसंस्कृतियों की चेतना के प्रचार–प्रसार की संवाहिका की अनुभवी रही है, जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका का निर्वाह करने की प्रतिभा रखती है।

हिंदी को विश्व–मानचित्र पर अपनी विराटता के साथ विराजमान करवाने के लिए कई सरकारी, गैर–सरकारी, भारतीय, प्रवासी भारतीयों की संस्थाएँ एवम् अन्य संस्थाएँ स्वेच्छा से अपना सहयोग दे रही हैं। मॉरिशस की आर्य समाज, हिंदी लेखक संघ, आर्य परोपकारिणी सभा, हिंदी प्रचारिणी सभा और रविवेद प्रचारिणी सभा आदि प्रमुख हैं। सूरीनाम में सूरीनामी हिंदी परिषद्, जयप्रकाश हिंदी संस्थान, संयुक्त राज्य अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद्, कनाडा की हिंदी परिषद्, हिंदी संघ, हिंदी लिटररी सोसायटी एवम् मुकुल हिंदी स्कूल आदि संस्थाएँ हिंदी प्रचार में संलग्न हैं। गयाना में हिंदी प्रचार सभा, इंग्लैंड में हिंदी समिति, हिंदी परिषद् आदि प्रमुख है। भारतीय संस्थाओं में 'राजभाषा प्रचार समिति वर्धा' और 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग' जैसी अनेक संस्थाओं ने भरसक अपना योगदान दिया है।

भारत की अंतर्राष्ट्रीय हैसियत और हिंदी :

बात अगर आर्थिक दृष्टि से की जाए तो भारत व चीन 21वीं सदी की दुनिया की सबसे तेज गति से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ इनके बाजार, उत्पादन और खपत में भी असीमित वृद्धि दर्ज की जा रही है। किसी देश की भाषा का विकास भी उस देश के बाजार और अर्थव्यवस्था के साथ निरन्तर गतिशील होता है। आज दुनिया का प्रत्येक देश भारत के साथ अपना व्यापार बढ़ाना चाहता है और अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए पश्चिम के बहुत से देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन प्रारम्भ हो चुका है। इससे बदलते विश्व में हिंदी को एक नई पहचान मिल रही है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदारी ने हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय करैन्सी रूपये के साथ–साथ भारतीय भाषा हिन्दी भी पूरी दुनिया के देशों में पहुँच गई है। भारत देश के इस चतुर्दिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए विश्व के बहुत से लोग अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जिससे वे भारत में अपना निवेश बढ़ा सके। इस संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं – ''कोई भाषा जितनी ही अधिक व्यापारों में मनुष्य का साथ देगी उसके विकास और प्रचार की उतनी ही अधिक सम्भावना होगी।''[3] निश्चय ही भारत की बढ़ती अन्तर्राष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान साबित हो रही है।

वैज्ञानिक और समर्थ भाषा हिंदी :

हिंदी आज भारत में ही नहीं विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि और ध्वन्यात्मक उच्चारण के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। ''देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है, भारतीय भाषाएँ

विश्व की अनेक भाषाओं की तुलना में वाक्य विज्ञान, ध्वनि–विज्ञान और रैखिक दृष्टि से अधिक से अधिक सुनियोजित हैं। अमेरिकी भाषा वैज्ञानिक श्री रिक ब्रिग्ज की यह धारणा है कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रोग्राम की दृष्टि से आदर्श भाषा है। इसलिए देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर कार्य करना कठिन नहीं है।''[4] हमारे यहाँ एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिंदु अनुस्वार का भी अपना महत्त्व है। दूसरी भाषाओं में यह वैज्ञानिकता नहीं पाई जाती। वैश्विक स्तर पर वहीं भाषा टिक पाएगी जिसका शब्द भंडार या शब्दकोश समुद्र के समान विशाल हो। उस भाषा में औदात्य भी होना चाहिए ताकि वह अपनी शब्द–संपदा में निरन्तर उन्नति के शिखर को छूए। भारत का यह दुर्भाग्य रहा है कि भारत में अनेक विदेशियों ने शासन किया जिनमें तुर्क, मंगोल, अफगान, मुगल, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और विशेषकर अँग्रेज थे इन शासकों ने अपनी–अपनी भाषा में दरबार चलाया और देश पर शासन किया। इस लिहाज से हिंदी का यह सौभाग्य रहा है कि हिंदी भाषा शासकीय भाषाओं से प्रभावित हुई और उसका शब्द भंडार जो संस्कृत के प्रभाव से पहले ही अत्यधिक समृद्ध था, वह और भी शब्द–सम्पन्न होता गया।

'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार हिंदी 2050 तक अधिकांश व्यावसायिक दुनिया पर हावी रहेगी, इसके बाद स्पेनिश, पुर्तगाली, अरबी और रूसी। यदि आप अपने कैरियर में भाषा द्वारा अधिक सफल होना चाहते हैं तो ऊपर सूचीबद्ध भाषाओं में से एक का अध्ययन करना सुनिश्चित करें।

सोशल मीडिया, वेब और हिंदीः

यह सत्य है कि हिंदी भाषा में अब ज्ञान विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री भी प्रकाशित हो रही है। विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में सराहनीय प्रयास हो रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया है तो दूसरी ओर अँग्रेजी के फेमस अखबार 'इकोनॉमिक टाइम्स' तथा 'बिज़नेस स्टैंडड़' हिंदी में प्रकाशित होकर हिंदी के अस्तित्व को एक नया आकार दे रहे हैं। यह हिंदी भाषा का बढ़ता प्रभाव ही है कि 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अँग्रेजी के हुआ करते थे वे हिंदी के विशुद्ध दबाव के चलते पूर्णतः हिंदी में कैद होकर रह गए। साथ ही साथ 'स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी के वैश्विक क्षितिज में नए कीर्तिमान बनाने में आज के स्मार्ट फोनों, विज्ञापन एजेंसियों, उपग्रह चैनलों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार माध्यमों के द्वारा मानव को मानव से जोड़ने वाली सबसे सुगम भाषा बनकर निखरी है।

यह हिंदी के बढ़ते वैश्विक कद का ही परिणाम है कि आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिंदी के ही हैं। इसका आशय यही है कि पढ़ा–लिखा वर्ग भी हिंदी के महत्त्व को समझ रहा है। ''अँग्रेजी के अनेक पत्र हिंदी में भी अपने संस्करण निकाल रहे हैं।''[5]

आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं अपितु दक्षिण पूर्वी एशिया, मध्य–एशिया तथा अमेरिका तक में हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिये प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियों के विकास से भी हिंदी कार्यक्रमों का एक नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है।

आज की वैश्विक हिंदी अब नई–प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ़ होकर माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, याहू तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कम्पनियों की सैर पर जा रही है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, ब्लॉगिंग, व्हाट्स–ऐप एवम् फेसबुक वेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी पत्रकारिता दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध है। ''सूचना तकनीक से सम्बद्ध हर बड़ी विदेशी कम्पनी चाहे माइक्रोसॉफ्ट या एप्पल हो, गूगल, फेसबुक और नोकिया अथवा सोनी वे सब हिंदी के महत्त्व को समझ चुकी हैं। वे जानती हैं कि भारत के गाँव–गाँव के घर–घर तक पहुँचना है तो सामग्री स्थानीय भाषा में ही देनी होगी, लेकिन बाहरी कंपनियों का ये हाल होने के बाद भी अपने ही देश के महाप्रबन्धकगण अपने आप को बदलने को तैयार नहीं हैं।''[6] अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख–दुःख, आशा–आकांक्षा की संवाहक बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी फिल्में भी अपनी उच्चस्तरीय कलात्मक सोपानों और सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्वमन का हिंदी में संस्पर्श कर रही है।

यह हिंदी की यशोकीर्ति का ही परिणाम है कि पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम व पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के संसद में हिंदी प्रयोग के साथ–साथ अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी अपने चुनावी घोषणा पत्र की प्रतियाँ अंग्रेजी के साथ–2 हिंदी में भी छपवाकर विपरित करवाई थी। यही कारण है कि बिल गेट्स ने हिंदी के वैश्विक महत्त्व को स्वीकार करते हुए हिंदी सॉफ्टवेयर तैयार करवाया है।

लेकिन अब सवाल यह उठता है कि अगर हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति इतनी ही सुदृढ़ है जितनी कि उपर्युक्त संकलित आँकड़े और स्थितियाँ हैं तो फिर क्या जरूरत है ये सब यशोगान रचने की और आए दिन विश्व सम्मेलन, संगोष्ठियों के आयोजन करने की? जो भाषा इतनी समृद्ध–सम्पन्न हो उसे प्रचार–प्रसार और शोर–शराबे जैसी बैशाखियों के सहारे की क्या आवश्यकता है? इस संदर्भ में सच्चाई कुछ और ही इत्तर चीज है। यह सत्य है कि हिन्दी अपने अन्तर्राष्ट्रीय सफर की ओर अग्रगामी है और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में उसकी जरूरत भी उसे मजबूत स्थिति प्रदान करने को मजबूर है।

हम चाहे तो हिंदी के इस प्रसार को लेकर सन्तुष्ट भी हो सकते हैं परन्तु हिन्दी की उसके अपने ही देश में जो स्थिति है, वह भारत के मानचित्र पर अर्ध–विक्षिप्त है। कहने का तात्पर्य है कि अपनी संख्या बल पर जो हिंदी समृद्ध हो रही है, उसे आधार बनाकर हम यह नहीं मान सकते कि

अगले कुछ दशकों में भारत में अँग्रेजी का स्थान हिंदी ले सकेगी क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार बोली के तौर पर भले हिंदी की आवश्यकता अनुभव करें किंतु लेखन के तौर पर सारा काम अँग्रेजी में ही करता है। भारत में अँग्रेजी भाषा के बरस्क हिंदी दूसरे दर्जे की भाषा बनी हुई है। ''आजादी के बाद से हिंदी को अँग्रेजी से ऊपर उठाने के लिए अनगिनत घोषणाएँ हुई, समितियाँ बनी और सभाएँ की गई, लेकिन सब जानते हैं कैसे अँग्रेजी ही अब भी शासन–प्रशासन की प्रभुत्वशाली भाषा बनी हुई है।''[7] इस बात को भारत का आज आम आदमी भी समझ चुका है। यूं इस देश में अरबों रूपये सरदार वल्लभ भाई पटेल की लोह–प्रतिमा बनाने में खर्च किया जाता है और जहाँ कर्ज की कठिनाई में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। वहाँ मेरे इस देश में सभी प्रकार के आँकड़े प्राप्त किये जा सकते हैं। ''हम सवा अरब भारतीय दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा है, लेकिन मात्र 0.1 फीसदी इंटरनेट साइट भारतीय भाषाओं पर आधारित हैं।''[8]

अपने वर्चस्व के लिए हम कह सकते हैं कि भारत और भारत के बाहर अँग्रेजी से भी ज्यादा संख्या में लोग हिंदी पढ़ रहे हैं किंतु व्यवहारिक तथ्य को लोग अच्छी तरह जानते हैं कि भारत में अँग्रेजी भाषा के मुकाबले हिंदी की स्थिति क्या है? यही कारण है कि भारत में आम लोग भी आर्थिक कष्ट उठाकर भी अपने बच्चों को अँग्रेजी माध्यम से पढ़ाना चाहते हैं। ''हमारे देश में अँग्रेजी सामाजिक श्रेष्ठता का भी आधार मानी जाती है, अँग्रेजी बोलते समय व्यक्ति स्वयं को सर्वसाधारण से ऊपर अनुभव करता है और वह इस अंतर को कायम रखने का प्रयास करता है। अँग्रेजी शासकों की भाषा रही है, इसलिए इसमें रौब और आतंक का भी अंश है और अब यह परम्परा इतनी बद्धमूल है कि उसके मिटने में अभी कई दशक लगेंगे।''[9]

हमारे यही अँग्रेजी भाषा के धुरंधर बच्चे कॉलेज में पहुँच कर भी हिन्दी में मात्राओं और अनुस्वार की गलतियाँ करते हैं और उन्हें शुद्ध हिन्दी लिखनी व बोलनी नहीं आती। आश्चर्य की बात है कि ऐसी अनियमित अव्यवस्थित, मुश्किल अँग्रेजी भारत के बच्चे कुछ समय में ही सीख जाते हैं और उन्हें अपनी मातृभाषा हिंदी नहीं आती जबकि हिंदी सीखना दूसरी अन्य भाषाओं के मुकाबले कहीं ज्यादा आसान है। दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशियों में हिंदी सीखने और जानने वालों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि हो रही है। इसके विपरित हमारे अपने देश में बच्चों को जब पहली कक्षा से क ख ग सिखाया जाता है तो बच्चों के साथ–साथ उनके माता–पिता भी नाक–भौंह सिकोड़ना शुरू कर देते हैं। क्या कभी हमने जानने और जाँचने की कोशिश की कि ऐसा क्यों होता है? क्योंकि अंग्रेजी बोलना आज फैशन–स्टेट्स बन गया है जबकि हिन्दी बोलने वालों को हमारे ही देश में हीन समझा जाता है।

आज हिंदी क्षेत्रों या हिन्दुस्तान में ही या यूं कहें कि अपने घर में ही हिंदी उपेक्षा का शिकार होकर रह गयी है। आज जब कोई हिंदी वक्ता हिंदी में भाषण देता है या हिंदी में बोलता है तो वो

अँग्रेजी बोलने वालों के बीच अपने आपको हीन समझता है जबकि अँग्रेजी बोलने वाला कभी अपने आपको इस बात के लिए हीन नहीं समझता कि उसे हिन्दी भाषा बोलनी या पढ़नी नहीं आती। आश्चर्य की बात है कि हिन्दी, हिन्दी–भाषी के लिए ही लज्जा का विषय बन कर रह गई है। आज समाज का सम्पन्न वर्ग या हिंदी सम्पन्न वर्ग जो हिंदी दिवस पर हिंदी के पक्ष में लंबे–चौड़े भाषण देते हैं वो स्वयं अपने बच्चों को अँग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। ऐसी उत्सुकता अँग्रेजी के प्रति आखिर क्यों?

अगर हम इसके कारणों परिणामों को जाँचने और जानने की कोशिश करे तो जो तथ्य निकल कर हमारे सामने आते हैं वो कहीं ना कहीं हमारी ही कमजोरी के परिचायक हैं। तथ्य ये हैं कि विधि, विज्ञान तथा वाणिज्य में आये दिन होने वाले रीसर्च, डवलमैन्ट, नई–नई खोजें तथा आविष्कार सब पाश्चात्य या विकसित देशों में होते हैं। जो नई खोजों को अपना नाम देते हैं यथा– Sim, mobile, chip,google और भी ना जाने क्या–क्या? सोच कर देखा जाए कि अगर मोबाइल का आविष्कार भारत में हुआ होता तो सारी दुनिया के लोग उसे टेलीफोन नहीं दूरभाष के नाम से जानते। जिस दिन हमारी साइन्स इतनी विकसित हो जायेगी उस दिन हमारी भाषा के शब्द पूरी दुनिया में जाने जाएंगें।

दूसरा हिन्दी हमें पूरी दुनिया से नहीं जोड़ती अगर एकमात्र हिन्दी भाषा जानने वाला व्यक्ति विश्व भ्रमण पर निकल पड़े तो वह अपनी भाषा के दम पर विश्व भ्रमण तो क्या भारत भ्रमण भी नहीं कर सकता। तीसरा हिंदी ज्ञानार्जन की भाषा तो है परंतु धनार्जन की भाषा नहीं है। मात्र हिंदी पढ़े–लिखे लोग आज के आधुनिक युग में कैरियर के रास्ते में कहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के शोर में ही गुम होकर रह जाते हैं। भारत देश में ऐसी कोई भी सरकारी या गैर सरकारी जगह नहीं जहाँ पर मात्र हिन्दी जानने वाला व्यक्ति अपनी आजीविका का निर्वाह कर सके? हाँ जो बात सौ प्रतिशत सत्य है वह यह है कि इस देश में वोट माँगने की जो भाषा है वह आज भी हिंदी ही है। यद्यपि समाज के ऊपरी ढ़ांचे में हिंदी को अवश्य मजबूत दिखाया जाता है। जिसकी वजह से हिन्दी के हिमायती बन्धु अवश्य ही भ्रम का शिकार हो जाते हैं। ''वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या प्रयोग और व्यवहार के स्तर पर उपेक्षा और उदासीनता की है। हमारे देश में एक पूरा वर्ग ऐसा है जो राष्ट्र भाषा और राजभाषा के पद पर अँग्रेजी को ही प्रतिष्ठित देखना चाहता है। यह वर्ग किसी प्रदेश–विशेष का ना होकर अमरबेल की तरह सर्वत्र फैला हुआ है।''[10]

हिंदी को वैश्विक–क्षितिज के विराट–फलक पर सुशोभित होने के लिए उसे विश्व व्यवस्था को संचालित करने वाली, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रयुक्त होने वाली भाषा बनना होगा। हिंदी को अँग्रेजी भाषा का पल्लू छोड़ स्वावलम्बी रूप से विकसित होना होगा। आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रोद्योगिकी क्षेत्र में नए मुकाम हासिल करें। इसके लिए समवेत

प्रयास की जरूरत है। यह तभी सम्भव है जब लोग अपने कर्त्तव्यों को गहराई से महसूस करें और सुदृढ़ इच्छा शक्ति के साथ संकल्पित हो। हिंदी को अगर हमें वास्तविक अर्थों में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाना है तो पहले उसे सच्चे अर्थों में राष्ट्र भाषा बनाना होगा। हम सब हिंदी के नाम पर वर्ष में एक बार हिंदी दिवस या हिंदी सम्मेलन के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम करने की औपचारिकता करने का निर्वाह भर कर लेते हैं। हिंदी पखवारा या हिंदी सप्ताह मना लेते हैं। वास्तविक अर्थों में अगर हिंदी को पूरे विश्व से जोड़ना है तो सब तरह की रूढ़िवादिता और परम्पराओं को छोड़ना होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा निश्चित रूप से हिंदी को होना चाहिए। लेकिन समय की माँग यह है कि हम सब हिंदी की विकास यात्रा में शामिल हो ताकि तमाम निष्कर्षों एवम् प्रतिमानों पर कसे जाने के लिए हिंदी को विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें।

संदर्भ सूचि :–

1. डॉ0 करुणाशंकर उपाध्याय–हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य लेख नेट पर उपलब्ध।
2. राष्ट्र भाषा हिंदी– जनवरी 2000 पृ.सं.–7.
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–चिंत्तामणि भाग–3.
4. डॉ0 विजय कुमार मल्होत्रा, कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग
5. डॉ0 वीना पाणी शर्मा– हिन्दी कैसे बने भारत के भाल की बिन्दी? स्वदेशी रिसर्च जर्नल, अप्रैल–जून 2013 पृ0 199.
6. दैनिक जागरण–उत्थान को तरसती हिन्दी, अरविन्द कुमार, 19 सितम्बर 2014.
7. डॉ0 वीना पाणि–स्वदेशी रिसर्च जर्नल जुलाई–सितम्बर 2013, पृ0 198.
8. दैनिक भास्कर (मधुरिमा परिशिष्ट : हिन्दी दिवस विशेष) 11 सितम्बर 2013, पृ0 5.
9. राष्ट्रभाषा हिन्दीः समस्याएँ और समाधान, डॉ0 देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ0 158.
10. भारत की भाषा समस्या, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृ0 164.